2 अप्रैल 2018, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2018-20

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे जिनवाणी चैनल पर

जिनवाणी JINVANI सुख, शान्ति, समृद्धि प्रतिदिन

प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 41, अंक : 1 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

अप्रैल (प्रथम), 2018 (वीर नि. संवत्-2544) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

मानस्तंभ का शिलान्यास संपन्न

उदयपुर (राज.) : यहाँ सेक्टर-3 स्थित श्री शांतिनाथ दिगम्बर जिन चैत्यालय में दिनांक 18 मार्च को सीमंधर लघु मानस्तंभ का शिलान्यास एवं आचार्य कुन्दकुन्द कहान स्वाध्याय भवन का उद्घाटन हुआ।

इस अवसर पर पण्डित राजकुमारजी शास्त्री के प्रवचनों का लाभ मिला। साथ ही पण्डित खेमचंदजी शास्त्री, डॉ. जिनेन्द्रजी शास्त्री एवं पण्डित ऋषभजी शास्त्री का भी उद्बोधन हुआ।

कार्यक्रम का प्रारम्भ पण्डित गजेन्द्रजी शास्त्री व हितंकरजी शास्त्री द्वारा मंगलाचरण से हुआ। मानस्तंभ का शिलान्यास श्रीमती लीलादेवी रंगलालजी मेहता भूपेन्द्रजी जितेन्द्रजी मेहता परिवार द्वारा एवं स्वाध्याय भवन का उद्घाटन श्री रमेशकुमारजी दीपककुमारजी अंकितकुमारजी बोहरा परिवार द्वारा किया गया। ध्वजारोहण श्री विमलकुमारजी रटोडिया ने किया।

इस अवसर पर अनेक स्थानों से पधारकर साधर्मीजनों ने लाभ लिया। साथ ही स्थानीय विद्वानों की भी उपस्थिति रही।

कार्यक्रम का निर्देशन एवं विधि-विधान के समस्त कार्य डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री उदयपुर द्वारा संपन्न हुये।

आई. टी. फेस्ट में सम्मान

जयपुर (राज.) : यहाँ सूचना एवं प्रौद्योगिकी विभाग की ओर से दिनांक 20 मार्च को आयोजित आई.टी. फेस्ट में मदनगंज-किशनगढ के ई-मित्र संचालक श्री समकित जैन को सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर श्री समकित ने 15 मिनट के उद्बोधन में 10 से अधिक नवाचार विभाग को दिये। आपने ई-मित्र हेकाथन में पूरे राजस्थान में 8वाँ स्थान प्राप्त किया। पुरस्कार के रूप में मुख्यमंत्री वसुन्धराराजे सहित अन्य की ओर से डिजिटल स्मार्ट फोन, लेपटॉप बैग व सर्टिफिकेट दिया गया।

> परद्रव्य कोई जबरन् तो बिगाड़ता नहीं है, अपने भाव बिगड़ें, तब वह भी बाह्य निमित्त है। तथा इसके निमित्त बिना भी भाव बिगड़ते हैं, इसलिये नियमरूप से निमित्त भी नहीं है। इसप्रकार परद्रव्य का तो दोष देखना मिथ्याभाव है, रागादि भाव ही बुरे हैं...
>
> **- मोक्षमार्गप्रकाशक, पृष्ठ 244**

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त

महाविद्यालय में प्रवेश पाने हेतु -

चलो सिद्धायतन-द्रोणगिरि! चलो सिद्धायतन-द्रोणगिरि!!

श्री वीतराग विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर

दिनांक 20 मई से 6 जून 2018 के अवसर पर

योग्यता :- 60 प्रतिशत से अधिक नम्बरों के साथ किसी भी बोर्ड से दसवीं कक्षा उत्तीर्ण।

- डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल और पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल के सानिध्य में रहकर 5 वर्षों तक जैनदर्शन का तलस्पर्शी मर्म समझने का स्वर्णिम अवसर।
- मात्र 5 वर्ष में जैनधर्म के आधिकारिक विद्वान बनें।
- स्वयं स्वाध्याय कर आत्मकल्याण करें, समाज को आत्मकल्याणकारी धर्म के मार्ग पर लगायें।
- सरकारी मान्यता प्राप्त स्नातक डिग्री ("शास्त्री" BA के समकक्ष)।
- आगे उच्च (सर्वोच्च) शिक्षा प्राप्त करने के अवसर उपलब्ध।
- शिक्षण के क्षेत्र में सुनहरे अवसर।
- सम्पूर्ण 5 वर्ष तक आवास एवं भोजन निःशुल्क।
- अब तक लगभग 800 स्नातक, सभी उच्च पदस्थ।
- विशाल शिक्षण संस्थानों के संचालन में रत।
- विश्वविद्यालय, कॉलेज और स्कूलों में प्रोफेसर, लेक्चरर और शिक्षक पदों पर कार्यरत।
- विगत 38 वर्षों से कार्यरत जैन समाज का अग्रणीय संस्थान।

सम्पादकीय –

ऐसे क्या पाप किये?

7

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

हम लोग अपनी-अपनी पत्नियों को लेने के लिए कभी न कभी सुसराल तो गये ही होंगे और आपके स्वसुर ने अपनी शक्त्यानुसार ५१/- १०१/- रु. देकर आपको तिलक किया ही होगा; परन्तु आपका उद्देश्य पत्नी को लाने का था न कि तिलक के रुपया लेने का, फिर भी तिलक तो हुआ ही होगा, तब आपने उस तिलक के रुपयों का क्या किया था? मेरे ख्याल से आपने उन रुपयों को वहाँ जो उनके बाल-बच्चे खड़े होंगे उन्हें ही बाँट दिये होंगे और पत्नी लेकर घर चले आये होंगे! यदि आप उन सभी रुपयों को चुपचाप जेब के हवाले कर लेते और सोचते चलो अच्छा हुआ ८ दिन का जेब खर्च का काम चलेगा, और उन रुपयों के लालच में शीघ्र-शीघ्र सुसराल में आने लगते तो क्या फिर आपको बार-बार १०१/- रुपये का टीका होता? अरे भाई दूसरी बार में ही १०१/- से ११/- रुपये रह जाते, और रुपयों का लालची जानकर कोई आदर भी नहीं करता।

अरे भाई! जिस प्रकार पत्नी को साथ लाते हैं और रुपये वहीं बांट आते हैं, ठीक इसी प्रकार भगवान की भक्ति में वीतरागता तो ग्रहण करते हैं और बीच-बीच में आया हुआ प्रशस्त रागरूप पुण्य वहीं भगवान के प्रज्वलित केवलज्ञानरूपी अग्नि में समर्पित कर देते हैं। पुण्य कोई ग्रहण करने की वस्तु नहीं। यद्यपि पूजा करने में पुण्य मिलेगा, इसमें दो राय नहीं है; परन्तु जो पुण्य का लोभी होकर ग्रहण करेगा और बार-बार पुण्य फल की प्राप्ति हेतु पूजा करेगा तो तीव्र राग होने से वह भी नहीं मिलेगा, अतः पूजा के सही उद्देश्य को समझकर पूजा करना चाहिए।

पुण्य कार्य करना अलग बात है और पुण्य की चाह करना अलग बात है। पापों से बचने के लिए पुण्य कार्य तो ज्ञानी भी करते हैं, किन्तु ज्ञानी को पुण्य की चाह नहीं होती। ज्ञानी जीव बुद्धिपूर्वक आदर के साथ पुण्य कार्य करते हुए भी श्रद्धा में उसे उपादेय नहीं मानते।

यहाँ ज्ञातव्य है कि पाप तो बुद्धिपूर्वक छोड़ा जाता है और पुण्य अपनी भूमिकानुसार स्वयं छूट जाता है, उसे छोड़ना नहीं पड़ता।

जब पुण्य धर्म का चोला पहनकर आता है तो उससे बार-बार सावधान करना पड़ता है कि भाई यह पुण्य परिणाम धर्म नहीं है, इसे धर्म मानना अज्ञान है।

इसी स्वस्ति मंगल पाठ में द्रव्य शुद्धि व भाव शुद्धि की जो चर्चा है, इसका तात्पर्य यह है कि बाह्य शारीरिक शुद्धि को यथाशक्ति करके भाव शुद्धि प्राप्त करने की हृदय से कामना करता हूँ। 'यथाशक्ति' का अर्थ है स्नानादि करके शुद्ध वस्त्र पहनना। वैसे तो शरीर हाड़, माँस का पिण्ड है, उसमें भी नव घिनावने द्वार प्रवाहित होते ही रहते हैं, मल-मूत्र का भरा हुआ घड़ा है, जिसकी शुद्धि संभव ही नहीं है, फिर भी बाह्य शुद्धि हेतु स्नानादि करके शुद्ध वस्त्र पहनना आवश्यक है। यही द्रव्य शुद्धि है। मैं विविध आलंबन स्वरूप अष्टद्रव्य लेकर हे भगवन! आपकी भूतार्थ यज्ञ यानी यथार्थ पूजन करता हूँ। विविध आलंबन में अष्टद्रव्य के अतिरिक्त वाद्य गीत-नृत्यादि भी हो सकते हैं।

पूजा में अष्ट द्रव्यों का प्रयोजन – जो कमजोर होते हैं, उन्हें आलंबनों की आवश्यकता होती है जो सबल हैं उसे आलंबन नहीं चाहिए। छठवें सातवें गुणस्थान में झूलने वाले भाव लिंगी परम दिगम्बर मुनिराजों की आत्मा अशक्त नहीं है, अतः उन्हें पूजन में आलंबन स्वरूप अष्टद्रव्य व नृत्य-गीत-संगीतादि की आवश्यकता नहीं होती। गृहस्थ का उपयोग इधर-उधर भटकता है, अतः चित्त की एकाग्रता हेतु उन्हें आलंबन चाहिए।

पूजन में अष्टद्रव्य चढ़ाने का दूसरा उद्देश्य यह है कि "हे भगवन! आज तक मैंने अनेक बार इन बहुमूल्य अष्टद्रव्य स्वरूप भोग सामग्री का सेवन किया; किन्तु इनसे किंचित् भी तृप्ति नहीं हुई, अतएव पुण्य के फल स्वरूप प्राप्त यह सभी सामग्री आपकी साक्षीपूर्वक समर्पण करके मैं वीतरागता की आराधना कर स्वयं वीतराग बनना चाहता हूँ।

(क्रमशः)

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर द्वारा संचालित

श्री गुरुदत्त कुन्दकुन्द कहान दि. जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट द्वारा तीर्थधाम सिद्धायतन द्रोणगिरी में आयोजित

52वाँ श्री वीतराग-विज्ञान शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर

दिनांक रविवार, 20 मई से बुधवार 6 जून 2018 तक

पंजीकरण राशि एवं रसीद नं. **आवास पंजीकरण फार्म** रजिस्ट्रेशन नं.

प्रमुख व्यक्ति का नाम ____________________

पूरा पता ____________________

शहर		राज्य		पिन कोड	
मोबाइल		ई–मेल			

अन्य सदस्यों के नाम	पुरुष/महिला	आयु	शिविरार्थी/ प्रशिक्षणार्थी	मोबाइल	भोजन (सामान्य/शोध/परमशोध)

	दिनांक	समय	हवाई जहाज	ट्रेन नाम एवं नं.	बस	स्वयं का साधन
सिद्धायतन में आगमन						
सिद्धायतन से प्रस्थान	दिनांक	समय	हवाई जहाज	ट्रेन नाम एवं नं.	बस	स्वयं का साधन

विशेष निवेदन –

1. शिविर में आवास रजिस्ट्रेशन हेतु शुल्क 100/– प्रतिव्यक्ति रखा गया है, बिना शुल्क रजिस्ट्रेशन फार्म मान्य नहीं होगा।
2. रजिस्ट्रेशन शुल्क अकाउंट पेई चेक/डीडी/ऑनलाईन ट्रांसफर/नगद भेजा जा सकता है।
3. राशि भेजने हेतु बैंक अकाउंट की डिटेल निम्नानुसार है–खाते का नाम– GURUDATTA K K K खाते का नम्बर–11279361989 बैंक एवं शाखा का नाम – S.B.I, Bada Malahara, IFS CODE - SBIN0002823
4. किसी कारण से आपका आना कैन्सिल हो जाता है तो 10 दिन पूर्व तक सूचित करने पर रजिस्ट्रेशन शुल्क वापिस कर दिया जावेगा।
5. सिद्धायतन में आवास की व्यवस्था सीमित हैं अतः आप **अपना आवास फॉर्म 30 अप्रैल 2018 तक तीर्थधाम सिद्धायतन के पते पर अवश्य भेज देवें, अथवा** Siddhaytandrongiri@gmail.com **पर मेल कर सकते हैं।**
6. आवास आरक्षण 'पहले आओ पहले पाओ' की नीति के आधार पर किया जावेगा। अतः शीघ्रता करें।
7. बाद में प्राप्त आवास फार्म स्थान होने पर ही स्वीकृत किये जा सकेंगे।
8. शिक्षण–प्रशिक्षण शिविर में आते समय सभी सदस्यों के पासपोर्ट साइज फोटो एवं परिचय पत्र (जैसे कि आधार कार्ड/पेन कार्ड/ड्राइविंग लाइसेन्स/पासपोर्ट आदि) अवश्य साथ लावें।

पत्रव्यवहार हेतु पता एवं सम्पर्क सूत्र : तीर्थधाम सिद्धायतन द्रोणगिरी, तह. बड़ा मलहरा, जिला–छतरपुर (म.प्र.) 473201 ● 9754967683 (स्वतंत्र शास्त्री, आवास प्रमुख), 9753456868 (पंकज जैन, मैनेजर), 8349981560 (शुभम शास्त्री, अधीक्षक), 99776142554 (कार्यालय)

महावीर जयन्ती पर विशेष -

क्या वीर का अवतार था, बस मात्र अन्यों के लिये?

– **परमात्मप्रकाश भारिल्ल** (कार्यकारी महामंत्री-टोडरमल स्मारक ट्रस्ट)

कैसी विडम्बना है कि आज ***महावीर को मात्र उन कामों के लिये याद किया जाता है, जो उन्होंने किये ही नहीं,*** *महावीर के उन कामों की चर्चा ही नहीं होती जो उन्होंने सचमुच किये, जो महावीर का प्रदेय है, सारे विश्व के लिये, समूची मानवता के लिये, अरे! प्राणीमात्र के लिये।*

प्रस्तुत है उक्त सभी मुद्दों को समेटे एक कविता, ***जो आपकी धारणाओं को झकझोर देगी, आपको यथार्थ का दिग्दर्शन करवायेगी।***

चौंकियेगा नहीं! यह महावीर की आलोचना नहीं है, ये तो वे बातें हैं जो महावीर ने की ही नहीं, और लोग उनके नाम पर प्रचारित करते हैं।

महावीर अनोखे थे, महावीर अद्भुत थे, उन्होंने जो कर दिखाया वह तो हमारी कल्पना में ही नहीं आता है, कल्पना में समाता ही नहीं है।

हम अपनी ही कल्पनाएं महावीर पर थोपते रहते हैं, यदि महावीर भी हम जैसा ही सोचते और करते तो वे भी हम जैसे ही बने रहते न? वे परमात्मा कैसे बन पाते?

यदि हम आज भी महावीर से कुछ नहीं सीखेंगे मात्र अपनी ही कल्पनाएं महावीर पर आरोपित करते रहेंगे तो हम आज जैसे हैं वैसे ही बने रहेंगे, आगे कैसे बढेंगे, आत्मकल्याण कैसे करेंगे?

हमें आवश्यकता है महावीर का दृष्टिकोण जानने और समझने की, अपने दृष्टिकोण को उन पर थोपने की नहीं, उनके नाम पर प्रचारित करने की नहीं।

हम यह स्वीकार ही नहीं कर पाते हैं कि यह भी एक तरीका हो सकता है आत्मक्रांति का, जगत के कल्याण का, जो महावीर ने अपनाया।

उनको यह सम्यग्ज्ञान था कि एक द्रव्य दूसरे द्रव्य का कर्ता-धर्ता है ही नहीं।

उन्होंने बाहर कुछ भी नहीं किया, जो कुछ किया अपने में किया, अपने अन्दर किया। और ठीक भी है, ***सभी लोग मात्र स्वयं अपने आपको सुधार लें तो सारी दुनिया सुधर जायेगी।***

दूसरे लोग कहाँ आज तक सारी दुनिया की गरीबी मिटा पाए हैं, पर यदि दुनिया का प्रत्येक व्यक्ति मात्र अपनी गरीबी मिटाने पर ध्यान दे, अपनी दरिद्रता दूर कर ले तो क्या कोई भी दरिद्री शेष रहेगा, क्या सारी दुनिया की गरीबी नहीं मिट जायेगी?

महावीर ये यही किया।

सारी दुनिया को आत्मकल्याण की राह दिखाई।

अपने उपदेश से, अपने व्यवहार से, जीवन से।

वे पर में नहीं उलझे।

अब तक पर में उलझ रहे थे तो संसार में भटक रहे थे, अब स्वयं तक सीमित हो गये तो भगवान बन गये।

यदि हमें भी भगवान बनना है तो यही करना होगा।

कविता पढते समय इस बात का ध्यान रखें कि प्रारम्भ के 8 पदों में उन कामों का उल्लेख किया गया है जो महावीर के द्वारा किये गये बतलाये जाते हैं, जैसे कि महावीर के बारे में बात करते हुए हर कोई यह कहता है कि -

''जब सारे देश में हिंसा का तांडव नृत्य हो रहा था, जनता त्राहिमाम कर रही थी, तब उसे मिटाने के लिये और शांति की स्थापना करने के लिये महावीर ने अवतार लिया।'' एक रूपक के माध्यम से मैंने यहाँ महावीर के समक्ष सवाल उपस्थित किये हैं कि ***आखिर हिंसा मिटाने के लिये और शांति की स्थापना के लिये आपने क्या किया?*** *कुछ भी किया हो ऐसा सुनाई व दिखाई तो देता नहीं है, हालांकि वे क्या नहीं कर सकते थे, आखिर राजकुमार थे व चाहते तो राजा भी बन सकते थे।*

अरे! और तो और ***कुछ और नहीं, आदेश नहीं तो उपदेश तो दे ही सकते थे न!***

उनकी कौन नहीं सुनता?

पर न तो गृहस्थ अवस्था में उपदेश दिया और न ही साधु अवस्था में।

दीक्षा ली तो वन में चले गये, आत्मा में चले गये, आत्म आराधना में लीन हो गये।

प्रारम्भ के 8 पदों में यही सब सवाल उठाये गये हैं व बाद के पदों में महावीर का पक्ष प्रस्तुत किया गया है।

''क्या वीर का अवतार था...''

(1)

की शांति की स्थापना, औ कष्ट सारे हर लिये।
क्या वीर का अवतार था, बस मात्र अन्यों के लिये।।

(2)

सबने कहा, हमने सुना, वो शांति का अवतार था।
उसको धरा के प्राणियों से, बेइन्तिहां ही प्यार था।।
कोई कहे तब शांति के, उपक्रम उन्होंने क्या किये।
क्या वीर का अवतार था, बस जाप जपने के लिये।।

(3)

चल रही थी आंधियां, और घिर उठा तूफान था।
हरी-भरी इन वादियों में, लालिमा का म्लान था।।
सब जीव जब अभिशप्त थे, बेमौत मरने के लिये।
तब वीर वन में जा बसे, क्या काम करने के लिये।।

(4)

हिंसा धरा पर व्याप्त थी, सब ओर त्राहिमाम था।
अरे! धरम के नाम पर, धर्मात्मा ही याम था।।

भक्षक बने बलवान थे, वा मूक मरने के लिये।
तब वीर तुमने क्या किया, यह दूर करने के लिये।।

(5)

मामा पिता भी भूप थे, खुद वीर तुम युवराज थे।
धन राज वैभव और बल, सबकुछ तुम्हारे पास थे।।
जब एक स्वर पर्याप्त था, सब शांत करने के लिये।
तब वीर की क्या कैफियत है, मौन धारण के लिये।।

(6)

वे रोक सकते थे बली, बस एक ही आदेश से।
लूट वा अतिचार सब बस, एक ही निर्देश से।।
तब वीर क्यूं यूं छोड़कर, हालात ऐसे चल दिये।
तुम्ही कहो रे वीर ये, अवतार था किसके लिये।।

(7)

क्या किया क्या वीर तुमने, काम ऐसा क्या किया।
जगत के कल्याण का, काम तुमने क्या किया।।
तुम तो चले ओ वीर बस, भगवान बनने के लिये।
हमको यहाँ पर छोड़कर, बस जाप जपने के लिये।।

(8)

थे संत से तुम राजसुत, हर एक को स्वीकार थे।
आदर्श तेरी राह पर, चलने सभी तैयार थे।।
यूंही फिर क्यों तुम अकेले, वन की डगर परचल दिये।
वे राह ही तकते रहे, तुम्हारे साथ चलने के लिये।।

महावीर कहते हैं कि **अनादिकाल से आज तक हम सभी संसार में ही सुख खोजते रहे। हमने संसार मेंसुख पाने के लिये क्या-क्या प्रयत्न नहीं किये, ऐसा कुछ शेष न रहा जो और किया जा सके। संसार में सुख की खोज का अंतिम निष्कर्ष यह रहा कि संसार में सुख है ही नहीं। संसार तो एकांत दु:ख ही है, तब संसार में सुख पाने के यत्न व्यर्थ हैं, तब कोई क्यों ऐसा असंभव प्रयास करे?**

जब उन्हें स्वयं संसार में सुख दिखाई नहीं दिया तो अन्य जीवों को संसार में सुख पाने का मार्ग कैसे बतला सकते थे, बस इसीलिये महावीर परोपकार की राह पर आगे नहीं बढे मात्र अंतर्लीन हो गये।

यूं भी राजा का आदेश तो सिर्फ एक देश पर चलता है, वे अपने आदेशों से कितने जीवों का भला कर सकते थे। **महावीर की करुणा के पात्र मात्र एक देश के नागरिक नहीं सिर्फ सम्पूर्ण मानव प्रजाति भी नहीं वरन् जगत के समस्त प्राणीमात्र थे,** इसीलिये तो उन्हें तीर्थंकर प्रकृति का बंध हुआ था।

उन्होंने अपनी आत्मा को जाना, पहिचाना और उसी में लीन हो गये। इसप्रकार मात्र उपदेश से ही मोक्ष का मार्ग नहीं बतलाया वरन् व्यवहार में करके दिखा दिया। जगत के प्राणीमात्र पर और भव्य जीवों पर यही उनका सर्वोत्कृष्ट उपकार है।

द्रव्यदृष्टि से तो हम सभी परमात्मा हैं ही, अब उनके बतलाये मार्ग पर चलें, आत्मलीन हो जाएं और पर्याय में भी परमात्मा बन जाएं।

उत्तर –

(9)

चिरकाल से संसार में, सुख खोजते थे वे अरे।
वीभत्स के उस दौर में, उपक्रम भी क्या-क्या ना करे।।
कुछ ना रहा अब शेष था, फिरइक बार करने के लिये।
इसलिये ना वीर निकले, पर उपकार करने के लिये।।

(10)

थम चुकी थी खोज अब, यह खोज का निष्कर्ष था।
एकांत दु:ख संसार में, यह सोच का उत्कर्ष था।।
तब क्यों करे कोई जतन, संसार में सुख के लिये।
क्या वीर का अवतार था, बस मात्र अन्यों के लिये।।

(11)

जो इष्ट ना अपने लिये, वह अन्य को कैसे करे।
कर्तापने की बुद्धि से, संसार में जीवे मरे।।
उनका तो जीवन था अरे, भव नाश करने के लिये।
ना वीर का अवतार था, बस मात्र अन्यों के लिये।।

वैराग्य समाचार

(1) गोहाटी (आसाम) निवासी श्री मोहनलालजी सेठी का दिनांक 7 मार्च को 85 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायी थे, पिछले 20 वर्षों से जयपुर में रहकर दोनों समय प्रवचनों का लाभ लिया करते थे। स्मारक में चलने वाली सभी गतिविधियों की आप भरपूर अनुमोदना किया करते थे। आपकी स्मृति में 11000/- रुपये ज्ञानदान हेतु संस्था को प्राप्त हुये।

(2) जबलपुर (म.प्र.) निवासी श्रीमती अंगूरी जैन धर्मपत्नी श्री राजकुमारजी जैन का 67 वर्ष की आयु में पंचपरमेष्ठी के स्मरणपूर्वक देहावसान हो गया। आप जबलपुर के विद्वान डॉ. मनोजजी जैन की माताजी थीं।

(3) आदर्श नगर-जयपुर (राज.) निवासी श्रीमती कृष्णा देवी जैन ध.प. स्व. श्री जयकुमारजी जैन का दिनांक 20 मार्च को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया।

(4) जयपुर (राज.) निवासी श्रीमती प्रमोद जैन सेठी ध.प. श्री चैतन्यकुमार जैन सेठी का दिनांक 24 मार्च को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया।

दिवंगत आत्मायें चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हों – यही मंगल भावना है।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

आगम के आलोक में -

समाधिमरण या सल्लेखना

12

-डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

काय सल्लेखना

काय सल्लेखना का स्वरूप स्पष्ट करते हुये पण्डित सदासुखदासजी लिखते हैं -

''अपनी आयु का शेष समय देखकर उसी के अनुसार देह से इंद्रियों से ममत्व रहित होकर आहार के स्वाद से विरक्त होकर क्रमशः काय सल्लेखना करता हुआ विचार करे -

हे आत्मन्! संसार परिभ्रमण करते हुए तूने इतना आहार किया है कि यदि एक-एक जन्म का एक-एक कण एकत्र करें तो अनन्त सुमेरु के बराबर हो जायें; तथा अनन्त जन्मों में इतना जल पिया है कि यदि एक-एक जन्म की एक-एक बूँद इकट्ठा करें तो अनन्त समुद्र भर जायें। इतने आहार और जल से भी तू तृप्त नहीं हुआ है तो अब रोग-जरादि से प्रत्यक्ष मरण निकट आ गया है, अब इस समय में किंचित् आहार-जल से कैसे तृप्ति होगी?

इस पर्याय में भी जब से जन्म लिया है, तब से प्रतिदिन ही आहार ग्रहण करता आया है, आहार का लोभी होकर के ही घोर आरंभ किये हैं; आहार के लोभ से ही हिंसा, असत्य, परधन-लालसा, अब्रह्म व परिग्रह का बहुत संग्रह तथा दुर्ध्यान आदि द्वारा अनेक कुकर्म उपार्जन किये हैं।

आहार की गृद्धता से ही दीनवृत्ति से पराधीन हुआ। आहार का लोभी होकर भक्ष्य-अभक्ष्य का विचार नहीं किया, रात्रि-दिन का विचार नहीं किया, योग्य-अयोग्य का विचार नहीं किया। आहार का लोभी होकर क्रोध, अभिमान, मायाचार, लोभ, याचना भी की। आहार की इच्छा करके अपना बड़ापना-स्वाभिमान नष्ट किया।

आहार का लोभी होकर के अनेक रोगों का घोर दुःख सहा, नीचजाति-नीचकुल वालों की सेवा की। आहार का लोभी होकर स्त्री के आधीन रहा, पुत्र के आधीन रहा।

आहार का लंपटी निर्लज्ज होता है, आचार-विचार रहित होता है, आपस में कट-कट कर मर जाता है, दुर्वचन सहता है। आहार के लिये ही तिर्यंचगति में परस्पर मार डालते हैं, भक्षण कर लेते हैं।

बहुत कहने से क्या? अब इस पर्याय में मुझे अल्प समय ही रहना है, आयु समाप्त होने को है, इसलिये रसों में गृद्धता छोड़कर, रसना इंद्रिय की लालसा छोड़कर यदि आहार का त्याग करने में उद्यमी नहीं होऊँगा तो व्रत, संयम, धर्म, यश, परलोक - इनको बिगाड़कर कुमरण करके संसार में ही परिभ्रमण करूँगा।

ऐसा निश्चय करके ही अतृप्ति करनेवाला आहार का त्याग करने के लिये किसी समय उपवास, कभी बेला, कभी तेला, कभी एक बार आहार करना, कभी नीरस आहार, कभी अल्प आहार इत्यादि क्रम से अपनी शक्ति अनुसार तथा आयु की शेष रही स्थिति प्रमाण आहार को घटाकर दुग्ध आदि ही पिये। फिर क्रम से दुग्ध आदि स्निग्ध पदार्थों का भी त्याग करके छांछ व गर्म जल आदि ही ग्रहण करे।

फिर क्रम से जलादि समस्त आहार का त्याग करके अपनी शक्ति प्रमाण उपवास करते हुए पंच परमेष्ठी में मन को लीन करते हुए धर्मध्यान रूप होकर बड़े यत्न से देह को त्यागना - उसे सल्लेखना जानना चाहिए।

इसप्रकार काय सल्लेखना का वर्णन किया।

अब यहाँ कोई प्रश्न करता है : यह आहारादि त्याग करके मरण करना तो आत्मघात है तथा आत्मघात करना अनुचित बताया है?

उसे उत्तर देते हैं - जिसके द्वारा बहुत समय तक अच्छी तरह से मुनिपना, श्रावकपना व महाव्रत-अणुव्रत पलते दिखाई दें; स्वाध्याय, ध्यान, दान, शील, तप, व्रत, उपवास आदि पलता हो; जिन पूजन, स्वाध्याय, धर्मोपदेश,

धर्मश्रवण, चारों आराधनाओं का सेवन अच्छी तरह निर्विघ्न सधता हो; दुर्भिक्ष आदि का भय नहीं आया हो; शरीर में असाध्य रोग नहीं आया हो; स्मरण शक्ति व ज्ञान को नष्ट करनेवाला बुढ़ापा भी नहीं प्राप्त हुआ हो; दशलक्षण धर्म तथा रत्नत्रय धर्म देह से पलता हो **उसे आहार त्यागकर समाधिमरण करना योग्य नहीं है।**

जिससे धर्म सधता होने पर भी यदि वह आहार त्यागकर मरण करता है; तो वह धर्म से पराङ्मुख होकर त्याग, व्रत, शील, संयम आदि द्वारा मोक्ष की साधक उत्तम मनुष्य पर्याय से विरक्त हुआ अपनी दीर्घ आयु होने पर भी व धर्म सेवन करते बनने पर भी **आहारादि का त्याग करनेवाला आत्मघाती होता है।**

भगवान की ऐसी आज्ञा है कि धर्म संयुक्त शरीर की बड़े यत्न से रक्षा करना चाहिये। यदि धर्म सेवन की सहकारी इस देह को आहार त्याग करके छोड़ देगा तो क्या नारकी-तिर्यंचों की संयम रहित देह से व्रत-तप-संयम सधेगा? रत्नत्रय की साधक तो यह मनुष्य देह ही है। जो धर्म की साधक मनुष्य देह को आहारादि त्यागकर छोड़ देता है; उसका क्या कार्य सिद्ध होता है?

इस देह को त्यागने से हमारा क्या प्रयोजन सधेगा? व्रत-धर्म रहित और दूसरा नया शरीर धारण कर लेगा।

अनन्तानन्त देह धारण करवाने का बीज तो कर्ममय कार्मण देह है, उसको मिथ्यात्व, असंयम, कषायादि का त्याग करके नष्ट करो।

आहारादि का त्याग करने से तो औदारिक हाड़-मांसमय शरीर मरेगा, जो तुरन्त नया दूसरा प्राप्त हो जायेगा। जब अष्ट कर्ममय कार्मण देह मरेगा तब जन्ममरण से छूटोगे। अतः कर्ममय देह को मारने के लिये इस मनुष्य शरीर द्वारा त्याग-व्रत-संयम में दृढ़ता धारण करके आत्मा का कल्याण करो।

जब धर्म सधता नहीं दिखाई दे तब ममत्व छोड़कर अवश्य ही विनाशीक देह को त्याग देने में ममता नहीं करना।[१]''

उक्त कथन में पंडित सदासुखदासजी अत्यन्त स्पष्ट शब्दों में आदेश दे रहे हैं कि जब तक इस देह में रहते हुये धर्मसाधन होता है, शरीर स्वस्थ है; तबतक किसी भी स्थिति में आहारादि का त्याग करके सल्लेखना लेना उचित नहीं है, अपितु आत्मघात ही है। आहारादि का त्याग करते समय इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिये।

(क्रमशः)

१. रत्नकरण्डश्रावकाचार पृष्ठ ४४८ से ४५०

चलो सिद्धायतन-द्रोणगिरि ! चलो सिद्धायतन-द्रोणगिरि !!

श्री वीतराग विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर

दिनांक 20 मई से 6 जून 2018

प्रशिक्षण पाइये : अपनों को पढाइये

प्रशिक्षण पाइये : बच्चों को पढाइये

आप भी आइये : औरों को भी लाइये

यदि अभी नहीं तो कब ?

क्या आप चाहते हैं कि आपके बच्चे भी आपके ही समान संस्कारी और धर्मात्मा बनें, शाकाहारी रहें, व्यसन रहित, सात्विक और गौरवशाली जीवन जीयें और कुसंगति से बचें ?

मात्र 18 दिनों में प्रशिक्षण प्राप्त करके अपने नगर में वीतराग-विज्ञान पाठशाला का संचालन कीजिये, बच्चों में धार्मिक संस्कारों का सिंचन कीजिये, उन्हें जैनधर्म का प्राथमिक ज्ञान दीजिये। यह उनके जीवन को सात्विक और वैभवशाली बनायेगा, उन्हें कुसंगति और बुरी आदतों से दूर रखेगा। (आवास एवं भोजन व्यवस्था निःशुल्क)

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

5 अप्रैल	जैन विश्वभारती-लाडनूं	व्याख्यान-अहिंसा
15 से 20 अप्रैल	मकरोनिया-सागर	पंचकल्याणक
25 से 30 अप्रैल	सोलापुर	समयसार विधान
1 से 6 मई	सूरत	समयसार विधान
20 मई से 6 जून	द्रोणगिरि	प्रशिक्षण शिविर
8 जून से 9 जुलाई	विदेश	तत्त्वप्रचारार्थ

... और तत्त्वनिर्णय न करने में किसी कर्म का दोष है नहीं, तेरा ही दोष है; परन्तु तू स्वयं तो महन्त रहना चाहता है और अपना दोष कर्मादिक को लगाता है, सो जिनआज्ञा माने तो ऐसी अनीति सम्भव नहीं है। **– मोक्षमार्गप्रकाशक, पृष्ठ 311**

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा संचालित एवं
श्री गुरुदत्त कुन्दकुन्द कहान दिग.जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट द्वारा आयोजित

52वाँ वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर

दिनांक 20 मई 2018 से 6 जून 2018 तक

- आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के भवतापहारी सी.डी. प्रवचन का प्रसारण।
- डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना आदि अनेक आत्मार्थी विद्वानों का प्रवचन, कक्षाओं के माध्यम से भरपूर लाभ।
- पाठशाला के अध्यापकों को बालबोध पाठमालायें एवं वीतराग-विज्ञान पाठमालाओं के अध्यापन हेतु विशेष प्रशिक्षण।
- देशभर के अलग-अलग प्रान्तों से पधार रहे साधर्मीजनों का मेला।
- श्री टोडरमल सिद्धान्त महाविद्यालय में प्रवेश लेने हेतु अपूर्व अवसर।
- बालकों हेतु डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया मुम्बई द्वारा विशेष कक्षायें।

आप सभी को शिविर में पधारने हेतु हार्दिक आमंत्रण है।

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय हेतु छात्रों का चयन इसी प्रशिक्षण शिविर में होता है; अत: महाविद्यालय में प्रवेश हेतु अधिक से अधिक छात्रों को प्रेरणा देकर शिविर में भिजवायें।

संपर्क सूत्र -

(1) ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर 302015 (राज.) फोन-0141-2705581, 2707458;
Email - ptstjaipur@yahoo.com
(2) तीर्थधाम सिद्धायतन, मु.पो.-द्रोणगिरी, ग्राम-सेंधपा, तह.-बड़ामलहरा, जिला-छतरपुर 471311 (म.प्र.); मुन्नालाल जैन (मंत्री) - 9406569839, पण्डित शुभम शास्त्री - 834938156, कार्यालय - 7389242836

द्रोणगिरि पहुंचने का मार्ग - द्रोणगिरि के लिये निकटतम रेलवे स्टेशन सागर (SGO) है। यहाँ से द्रोणगिरि 120 कि.मी. है, सागर से बड़ामलहरा के लिये बसें हर समय मिलती हैं। इसके अलावा ललितपुर/झांसी से भी जा सकते हैं।

हार्दिक बधाई!

कोहेफिजा-भोपाल (म.प्र.) निवासी श्री महेन्द्रजी चौधरी एवं श्रीमती किरण चौधरी के वैवाहिक जीवन के 50 वर्ष पूर्ण होने पर अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में संस्था हेतु 5100/- रुपये प्राप्त हुये। जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई!

पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय, जयपुर के स्नातक संजयकुमारजी शाह को जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर द्वारा पीएच.डी. की उपाधि प्रदान की गई। आपने यह शोध-प्रबन्ध संस्कृत भाषा में ''महाभाष्यतृतीयाध्ययद्वितीयपादस्य प्रदीपटीका उद्योतदिशासमीक्षणम्'' विषय पर डॉ. बजरंगलालजी शर्मा के निर्देशन में पूर्ण किया।

इस उपलक्ष्य में टोडरमल महाविद्यालय परिवार एवं जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई!

द्रोणगिरि में बालकों हेतु विशेष कक्षायें

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा संचालित 52वें वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर सिद्धायतन-द्रोणगिरि (म.प्र.) में दिनांक 20 मई से 6 जून 2018 तक बाल मनोविज्ञान की विशेषज्ञा एवं विविध बाल साहित्य की रचयिता डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया, मुम्बई द्वारा बालकों के लिये विशेष कक्षाओं का आयोजन किया जायेगा। अधिक से अधिक बालक इस अवसर का लाभ लेवें।

आगामी कार्यक्रम...

गोम्मटसार जीवकाण्ड शिक्षण शिविर (चतुर्थ) शिविर मोदीजी की नसियां, इन्दौर में दिनांक 19 से 27 मई तक लगने जा रहा है, जिसमें श्री विकासजी छाबड़ा, इन्दौर द्वारा प्रतिदिन 6 घंटे की कक्षाएं ली जायेंगी। बाहर के शिविरार्थियों हेतु नि:शुल्क भोजन एवं आवास व्यवस्था है। रजिस्ट्रेशन हेतु अन्तिम तिथि 10 अप्रैल है। **रजिस्ट्रेशन हेतु संपर्क -** श्रीमती प्रियंका गोधा (9479445253) पिछले शिविर के वीडियो हेतु देखें - **www.jainkosh.org**

प्रकाशन तिथि : 28 मार्च 2018

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com